Deptt of psychology B.A. III (H) G1-B
5/02/24
Dr. Kusum Kumari
Social psy

✓ Determinants of Pro-social behaviour

प्रति सामाजिक व्यवहार (Pro-social behaviour) ऐसे व्यवहार को कहा जाता है जिनका मूल्यांकन धनात्मक रूप से किया जाता है। इस तरह के व्यवहार से दूसरों को लाभ पहुँचता है तथा ~~कहा~~ व्यवहार करने वालों को किसी तरह का लाभ न पहुँचाकर कुछ हानि होने की संभावना होती है। ऐसे व्यवहार सामाजिक मूल्यों एवं मर्यादाओं के अनुरूप होते हैं। जैसे- रक्तदान करना, मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति देना, गरीब लोगों को रोटी देना, दान देना इत्यादि इसके उदाहरण हैं।

Baron & Byrne (1987) ने Prosocial behaviour को परिभाषित किया है। उनके अनुसार, "प्रति सामाजिक व्यवहार ऐसे व्यवहार को कहा जाता है जिसमें व्यवहार करने वाले को स्पष्ट लाभ नहीं होता है बल्कि इससे उनमें कुछ खतरा बढ़ जाता है या उन्हें कुछ बलिदान भी करना पड़ता है। ऐसे व्यवहार का आधार ~~आचरण~~ आचरण के नैतिक मानक होते हैं।"

"Pro-social behaviour refers to acts that have no obvious benifits for the individual engaging in them and even involve risk and some degree of sacrifice. Such acts are based on ethical standards of conducts."

भी तरफ देखता है तथा दूसरे के व्यवहारों को देखकर ही गंभीरता का अनुमान लगाता है। तथा फिर फिर वह निश्चित करता है कि आपातकालीन स्थिति में कैसे व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए कि नहीं करनी चाहिए। समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययन से स्पष्ट होता है कि संकटकालीन परिस्थिति में जैसे जैसे व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि होती है वैसे वैसे किसी भी व्यक्ति द्वारा परोपकारी व्यवहार दिखलाने की संभावना में कमी आती है। इसी तरह के प्रभाव को दर्शक प्रभाव (Bystander effect) कहा जाता है।

(5) संभावित भौतिक क्षति (Possible physical loss) :→ यदि मददकर्ता को दूसरे की सहायता करने से उसे किसी प्रकार की भौतिक क्षति की संभावना दिखाई पड़ती है तो सहायता परक व्यवहार में कमी आ जाती है। Allen (1970) ने ऐसा अपने प्रयोगात्मक अध्ययन में पाया।

(6) समयाभाव (Lack of time) :→ जब एक परिस्थिति ऐसी होती है कि व्यक्ति को किसी महत्वपूर्ण कार्य में व्यस्त होता है और उसके पास समय का अभाव होता है तो वैसी परिस्थिति में वह सहायता परक व्यवहार नहीं कर पाता है। जब कारक पर Darley and Batson (1973) ने अपने प्रयोगात्मक अध्ययन पर किया।

(2) सामाजिक निर्धारक (Social determinants)

समाज मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययनों के आलोक में निम्नलिखित तीन तरह के सामाजिक कारकों की पहचान की गई है। जिनसे Pro-social behaviour अधिक प्रभावित होता है।

(क) सामाजिक दायित्व (Social Responsibility)

इस कारक के अनुसार व्यक्ति दूसरों की मदद इसलिए कर पाता है क्योंकि दूसरों की मदद करना उनके लिए समाज का एक मानक है। वह जिस समाज में पाला पोसा गया है उसके नियमों मानकों एवं मूल्यों को ध्यान में रखते हुए वह दूसरों की मदद करता है। ऐसे सामाजिक मानक के अनुसार दूसरों की मदद करना प्रत्येक व्यक्ति का एक तरह का सामाजिक दायित्व होता है। Berkowitz & Daniels (1963) ने अपने अध्ययन में इस कारक की संपुष्टि की है।

(ख) समानता एवं पारस्परिकता (Equity and reciprocity) :→

समानता एवं पारस्परिकता के मानक से भी Pro-social behaviour प्रभावित होता है। समानता मानक के अनुसार यदि किसी व्यक्ति को जितना तकलीफ या पीड़ा होना चाहिए उससे अधिक मात्रा में उसे तकलीफ या पीड़ा का सामना करना पड़ रहा है तो ऐसे व्यक्ति के साथ तुरंत सहायता की जानी चाहिए। पारस्परिकता मानक के अनुसार मददकर्ता तभी किसी दूसरे को मदद करता है जब वह यह

समझता है कि भविष्य में वह भी मुझे मदद करेगा। Wilke & Lanzetta (1970) ने इस कारक के अनेक उदाहरण अपने प्रयोगात्मक अध्ययन में पाया है।

(ख) सामाजिक विनिमय (Social exchange) :→ Social exchange का भी प्रभाव Pro-social behaviour पर पड़ता है। Social exchange में Pro-social behaviour का होना इस व्यवहार के संभावित लाभ या पुरस्कार तथा हानि के विश्लेषण से भी होता है। Pro social behaviour की परिस्थिति में व्यक्ति अपने व्यवहार से अधिकतम लाभ तथा न्यूनतम हानि प्राप्त करना चाहता है। यदि संकटकालीन स्थिति में व्यक्ति को लाभ या पुरस्कार की मात्रा हानि की मात्रा से अधिक है तो व्यक्ति द्वारा Pro-social behaviour करने की संभावना अधिक होती है।

(3) व्यक्ति परक निर्धारक (Individual determinants) Pro-social behaviour दिखलाने में वैयक्तिक विभिन्नता पाई जाती है। कौन व्यक्ति किसकी सहायता करेगा यह वैयक्तिक कारकों से प्रभावित होता है। व्यक्ति परक निर्धारक के निम्नलिखित कारक हैं :→

(क) पसंदगी (Liking) :→ मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययनों से स्पष्ट है कि जिसे व्यक्ति पसंद करता है उसकी मदद वह तुरंत करना चाहता है। परन्तु जिसे नापसंद करता है उसकी मदद करने में वह आनाकानी

करने लगता है। Goodstadt (1971) ने अपने अध्ययनों में इस तथ्य की संपुष्टि की है।

(क) प्रजाति (Race) :→ कुछ अध्ययनों में देखा गया है कि जब मदद चाहनेवाला उसी प्रजाति का होता है जिस प्रजाति का मददकर्ता होता है तो मदद कर्ता उसे फौरन सहायता पहुँचाता है परन्तु जब वह भिन्न प्रजाति का होता है तो मददकर्ता मदद करने में हिचकिचाता है।

(ख) पीड़ित व्यक्ति का लिंग (Sex of victim) :→ Pro-social behaviour पीड़ित व्यक्ति के लिंग से भी प्रभावित होता है। मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि पीड़ित व्यक्ति का लिंग पुरुष न होकर महिला है तो लोग उसे अधिक सहायता करते हैं।

(ग) समानता (Similarity) :→ Pro-social behaviour पर पीड़ित व्यक्ति तथा सहायता प्रदान करनेवाले व्यक्ति के बीच समानता का सीधा एवं प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। वेशभूषा की शैली में समानता राष्ट्रीयता में समानता, मनोवृत्ति में समानता इत्यादि होने पर Pro-social behaviour अत्यधिक प्रभावित होता है।

Conclusion :→ इस प्रकार स्पष्ट होता है कि Pro-social behaviour के अनेक determinants हैं जिनसे Pro-social behaviour प्रभावित होता है।